RNI No - RAJHIN/2003/9899 : Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2015-2017
Published on 30 September 2017 : Posted at RMS, Sri Ganganagar on Ist/2nd of October 2017

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : छठा | अक्टूबर–2017

5

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु की भक्ति

21

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल–जवाब

32

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

निन्दा

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 , 98 71 50 19 99

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 , 99 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 187 Website : www.ajaibbani.org

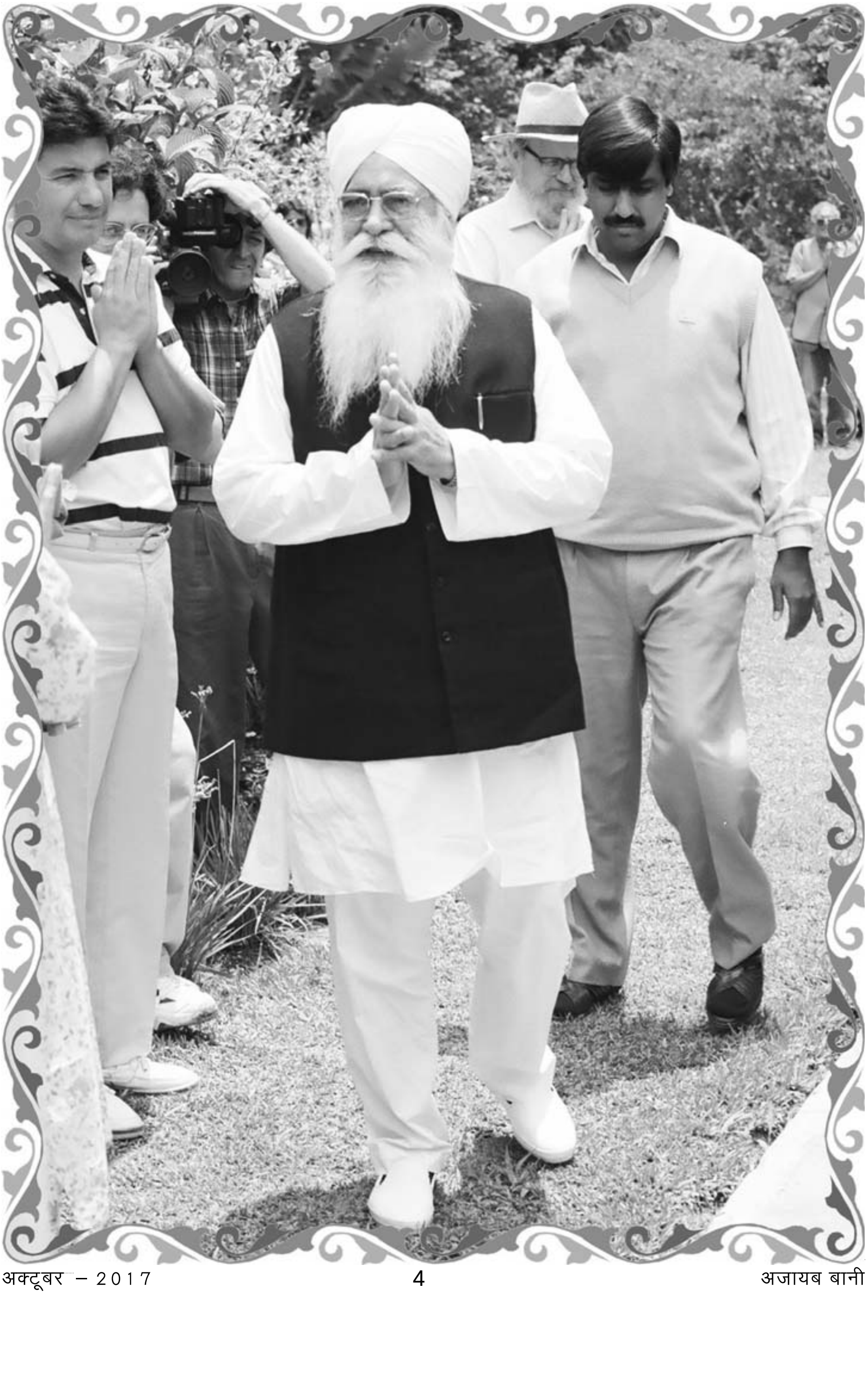

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु की भक्ति

गुरु रामदास जी की बानी DVD-502 अमेरिका

मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना।।

अगर हमारे शरीर को कोई रोग लगा हो बेशक हम किसी भी उम्र में हों तो हम दुनियादारी का कोई भी काम नहीं कर सकते। इसी तरह जब तक हमारा मन रोगी है तब तक हम शब्द-नाम के साथ नहीं जुड़ सकते, सही तरीके से अभ्यास नहीं कर सकते। रोगी मन कुछ नहीं कर सकता। मन को कामवासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के रोग लगे हुए हैं।

हम गुरु की सेवा तभी कर सकते हैं जब हम अपने मन को पवित्र कर लेते हैं, पवित्र मन हमें शब्द-नाम की कमाई से नहीं हटाता। जब हम अपनी आत्मा को शब्द-नाम के साथ जोड़ लेते हैं सिमरन करके एकाग्र हो जाते हैं तब हम सूरज, चंद्रमा, सितारे पार करके सतगुरु के स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं। वहाँ मैं-मेरी खत्म हो जाती है, तू ही तू रह जाता है। तब सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है आगे गुरु सेवक की आत्मा को सचखंड लेकर जाने का जिम्मेवार है।

मन दो काम नहीं कर सकता। हम शब्द-नाम की कमाई कर सकते हैं या दुनिया के विषय भोग सकते हैं। काम-वासना के कारण हमारी आत्मा गिर जाती है नाम की चढ़ाई के काबिल नहीं रहती। जहाँ नाम प्रकट हो जाता है वहाँ काम टिक नहीं सकता। कबीर साहब ने काम की तुलना दिन-रात से की है। जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं, जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''आपके अंदर ये रोग हैं अगर आप इन रोगों को दूर करना चाहते हैं तो आप महात्मा की सोहबत-संगत में जाएं।'' हम महात्मा की सोहबत-संगत में रोज जाते हैं लेकिन हमारा पत्थर और पानी वाला लेखा चल रहा है। जिस तरह पत्थर के ऊपर सारा साल बारिश होती रहती है लेकिन उसके अंदर कभी पानी नहीं जाता। हमारी भी यही हालत है हम सतसंग में तो जरूर जाते हैं, हमारे अंदर प्यार भी है लेकिन हम जो कुछ सतसंग में सुनते हैं उस पर अमल नहीं करते।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि आप आग के ऊपर जितनी ज्यादा लकड़ियां डालेंगे उसमें से उतनी ज्यादा आग भड़केगी। अगर आप यह कहें कि हमने आज विषय भोग लिया है कल हमें शान्ति आ जाएगी लेकिन इससे आपके अंदर और ज्यादा इच्छा पैदा होगी।

नानक रोगु गवाइ मिली सतिगुर साधू सजना।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''अगर आप इन रोगों को भगाना चाहते हैं तो सन्तों के बताए हुए उपदेश पर चलें। ज्यादा से ज्यादा भजन-अभ्यास करें, अपने आपको तीसरे तिल पर एकाग्र रखें।''

मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु।।

अब आप कहते हैं, ''शब्द-नाम की कमाई करने से जब हम त्रिकुटी से ऊपर पहुँच जाते हैं तब हमारा मन त्रिकुटी ब्रह्म के शिखर पर जाकर रह जाता है। जब हम वापिस आते हैं तब हमारा मन फिर साथ हो जाता है। हमारे मन के ऊपर नाम का रंग चढ़ा होता है यह मन समझा हुआ दोस्त होता है।''

जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि।।

हम अपने गुरु पर बलिहार जाते हैं क्योंकि गुरु ने हमें शब्द-नाम का दान दिया और हमें इन रोगों से बचाया।

तू करता पुरखु अगमु है किसु नालि तू वड़ीऐ।
तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तू है पड़ीऐ।।

अब गुरु रामदास जी उस परमात्मा की महिमा गाते हैं, ''तू सबसे बड़ा है, तू करण-कारण है हम तेरे बराबर किसकी तुलना करें? तू सबका दाता है सबका बादशाह है सबकी रखवाली करता है।'' कबीर साहब कहते हैं:

कहत कबीर गूंगे गुड़ खाया, पूछे कहन न जाई हो।

हम परमात्मा की क्या बड़ाई कर सकते हैं? जिस तरह गूंगा गुड़ खा लेता है लेकिन गुण का स्वाद नहीं बता सकता। गूंगा ज्यादा से ज्यादा खुशी में कंधे ही हिला सकता है।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर रोजा ताजमहल की मिसाल दिया करते थे। हिन्दुस्तान में शाहजहाँ ने बहुत अच्छी ईमारत रोजा ताजमहल बनवाया है। अगर हम किसी जगह यह मिसाल दें कि रोजा ताजमहल इस तरह का है उस तरह की कोई ईमारत शहर या गाँव में है ही नहीं। जब मिट्टी की मिट्टी से ही मिसाल नहीं दी जा सकती तो हम किस तरह बताएं कि परमात्मा इस तरह का है? सबसे अच्छा तो यह है कि आप अपने ख्याल को एकाग्र करके सतगुरु की मदद से जीते जी उस परमात्मा से मिल सकते हैं।

तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ।
तू सचा सभस दा खसमु है सभदू तू चड़ीऐ।
तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ।

आप कहते हैं, ''तू सबके अंदर बसता है कोई शरीर तेरे बिना खाली नहीं। पशु, पक्षी, पेड़ कोई ऐसी जगह है जहाँ तू नहीं बस रहा? लेकिन तू गुरुमुखों में प्रकट होता है। गुरुमुखों ने संसार को संदेश दिया कि एक ऐसी चीज आपके अंदर बस रही है जिसके होने की वजह से आपकी शोभा है, सब आपका आदर करते हैं। उसी शक्ति के कारण हमारा शरीर चल-फिर रहा है। जब हमारे अंदर से यह शक्ति निकल जाती है तो कोई इस शरीर की कौड़ी देने के लिए तैयार नहीं होता इसे मिट्टी में दफना देते हैं।''

महात्मा हमें हमेशा बताते हैं कि मनमुख और गुरमुख दो प्रकार के इंसान इस संसार में आते हैं। गुरुमुख हमेशा ही परमात्मा को सबके अंदर बताते हैं। गुरुमुखों ने परमात्मा को प्रकट किया होता है लेकिन मनमुख इस चीज को नहीं मानते। गुरु रामदास जी सवाल के तौर पर कहते हैं कि परमात्मा ने पाँच तत्त्वों का इंसान बनाया कोई चार या छह तत्त्वों का इंसान बनाकर परमात्मा के आगे खड़ा करके तो दिखाए!

आज दुनिया ने ईलाज में बहुत तरक्की की है बीमारी की दवाई देते हैं और डॉक्टर चमत्कार भी दिखाते हैं लेकिन जब मौत आती है तो कोई उस आत्मा को एक सैकिंड के लिए भी इस शरीर में नहीं रख सकता। डॉक्टर को यह पता नहीं कि आत्मा शरीर में से निकलकर कहाँ गई, इसकी क्या हालत हुई?

मैं मनि तनि प्रेमु पिरंम का अठे पहर लगंनि।
जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि।।

अब आप कहते हैं, ''मैंने उस परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया। मेरे अंदर चौबिस घंटे उस परमात्मा के लिए

अटूट प्यार है। यह मेरे सतगुरु की कृपा हुई जिसने दया करके मुझे उस परमात्मा के साथ जोड़ा।''

जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि।
नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि।।

आप कहते हैं, ''परमात्मा प्रेम हैं। जिनके अंदर परमात्मा प्रकट है वे अपने अंदर प्रेम पैदा कर लेते हैं। वे जैसे भी बोलते हैं परमात्मा को अच्छे लगते हैं। जिस परमात्मा ने प्यार लगाया होता है वह खुद जानता है कि यह कितना स्याना है।''

भोले भाए मिले रघुराय।

महात्मा हमें समझाते हैं अगर परमात्मा नहाने-धोने से मिलता होता तो मछलियां, मेंढ़क पानी में ही रहते हैं वे परमात्मा को प्राप्त कर लेते। अगर परमात्मा चतुर लोगों को मिल जाता तो भोले लोग रह जाते। अगर परमात्मा पैसा खर्च करने से मिलता होता तो साहूकार लोग उसे प्राप्त कर लेते। बुल्लेशाह कहते है:

बस बस किताबां नूं ठप्प मुल्ला, सानूं इश्क दी गल्ल सुणा कोई।

बुल्लेशाह बहुत पढ़ा-लिखा था। जब बुल्लेशाह ने ईनायत शाह से कलमा प्राप्त किया तब वह यही कहता था, ''मैं मस्जिद का काजी हूँ मैं मस्जिद जाना नहीं छोड़ सकता क्योंकि दुनिया मेरी निन्दा करेगी कि यह मस्जिद का काजी होकर मस्जिद छोड़ गया है।'' ईनायत शाह ने कहा, ''मैंने तुझे कलमें के साथ जोड़ा है। मैं यह नहीं कहता कि तू अपने रस्मों-रिवाज छोड़ दे। अब तूने विचार करना है क्या चीज ठीक है? मेरी तरफ से तू सारा दिन मस्जिद में ही बैठा रह।'' जब बुल्लेशाह ने कमाई की तो उसके अंदर से लोक-लाज भी निकल गई। आखिर जब वह

ईनायत शाह के दर्शनों के लिए गया तो ईनायत शाह ने पूछा, ''क्या अब मस्जिद में जाता है, लोगो को रस्मों-रिवाज बताता है?'' बुल्लेशाह ने कहाः

नमाज पढ़ा के तें वल देखां मैंनू काबा भुल गयो ई।

हे सतगुरु! अब मैं नमाज पढ़ूं या तेरी तरफ देखूं अब मुझे तू ही तू दिखाई देता है। मैं मस्जिद जाना भूल गया हूँ।

तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही।
तू करहि सु सचे भला है गुरसबदि बुझाही।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हे परमात्मा, तू अभूल है। तू जीवों को पैदा करके कभी नहीं भूलता। संसार में तेरा जो वरतारा हो रहा है उसे गुरुमुख लोग ही जानते हैं।''

तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही।
तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही।
सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही।।

आप कहते हैं, ''तू दयालु है, तू सबका है। जो तुझे ध्याते हैं तू उन्हें दुनिया के बंधनों से आजाद कर देता है उन्हें यमों के हवाले नहीं करता अगर यम बांधकर भी खड़े हों तो तू यमों से छुड़वा देता है। प्रभु की भक्ति अमृत की तरह है। **प्रभु की भक्ति** सुखों की दाती है, दुखों का नाश करने वाली है। यह काम, क्रोध, लोभ ,मोह और अहंकार की नाशक है।''

जो प्रेम-प्यार से प्रभु की खोज करते हैं उन्हें प्रभु मिल जाता है। प्रभु के भक्त प्रभु से बढ़कर हैं लेकिन हम अपने आप प्रभु को नहीं पा सकते। हम प्रभु को महात्मा की सोहबत-संगत के जरिए ही पा सकते हैं।

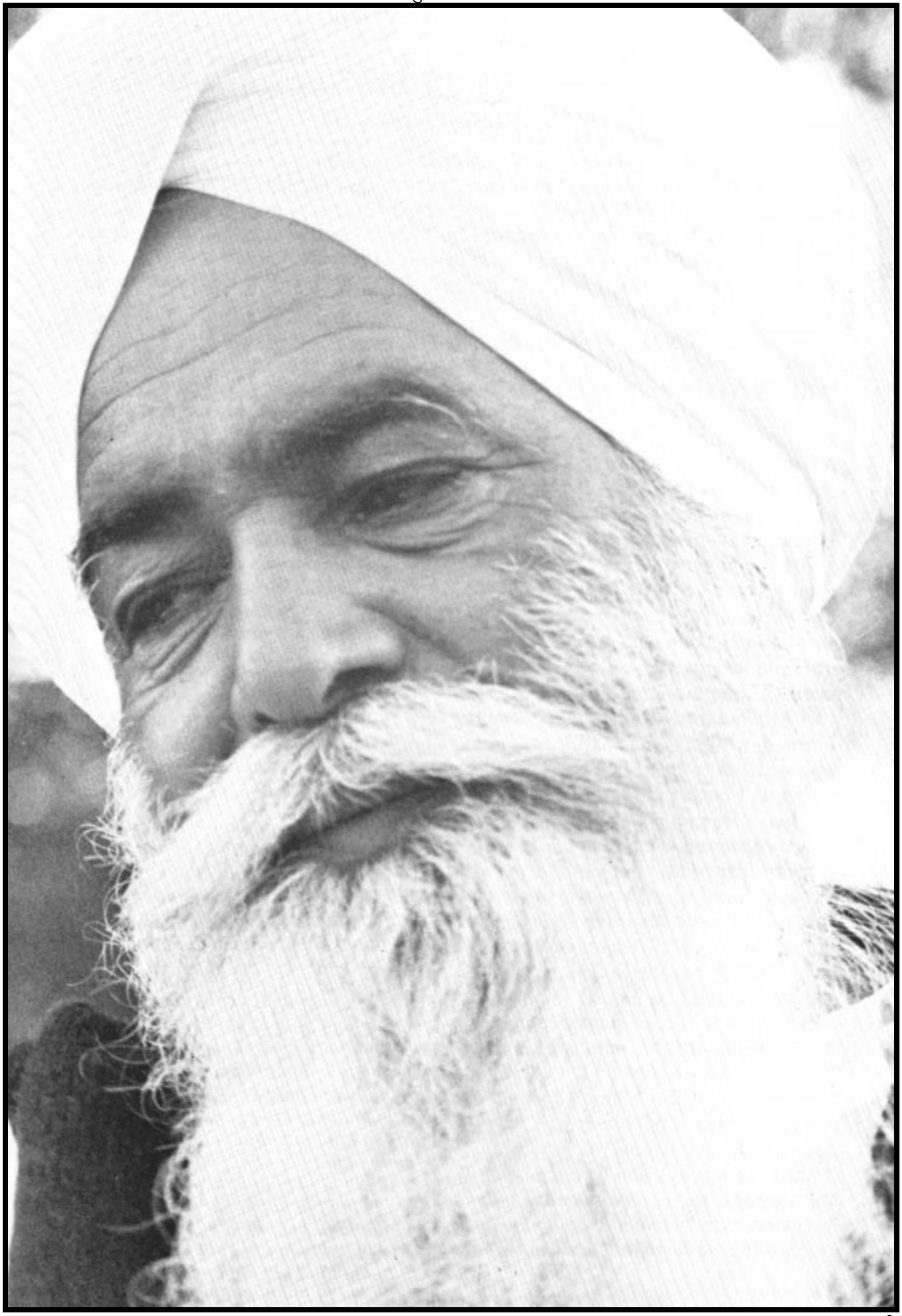

सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि।
गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि।।

अब आप कहते हैं, ''**प्रभु की भक्ति** करके हम दुखों से बचते हैं। जब हमने गुरु से उसका संदेश सुना तो हमारी आँखों से पानी बहने लगा कि ओह! हम ऐसे परमात्मा से नहीं मिले। अब जुबान पर उसका नाम आ गया। चौबिस घंटे उसका सिमरन है आँखें प्रेम से भीगी हुई हैं। सतगुरु ने बहुत दया की हमें उस परमात्मा का संदेश दिया, प्रेम दिया।''

हुजूर कहा करते थे, ''प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के नजदीक कर दें। अगर बारूद गीला है तो उसे तपिश की जरूरत है। बारूद को खुष्क होने में भी वक्त लगता है जब बारूद खुष्क हो जाता है फिर उसे अग्नि पकड़ती है।''

सन्तमत में ऐसा नहीं कि एक आदमी को नाम लिए हुए बीस साल या पचास साल हो गए हैं उसकी सुरत चढ़ जाएगी। यह तो प्रेमी की हिम्मत और मेहनत पर निर्भर है, गुरु तो हमेशा दया करने के लिए तैयार है। जिन्होंने रातें जागी मेहनत की वही कामयाब होते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ।
सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रहमु इकु सोइ।।

आप कहते हैं, ''सतगुरु संसार में दयालु बनकर आता है, वह दया करना ही जानता है। सतगुरु का किसी के साथ वैर

नहीं होता वह अंदर से निरवैर होता है।'' आप इतिहास पढ़कर देखें! किस तरह लोगों ने महात्माओं के साथ बुरा व्यवहार किया लेकिन किसी भी महात्मा ने बद्दुआ नहीं दी।

गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया। जब आपके सिर में गर्म रेत डाल रहे थे उस समय आपके एक प्रेमी मियां मीर को पता लगा कि लाहौर में बहुत कहर हो रहा है। मियाँ मीर ने आपके पास पहुँचकर कहा, ''गुरुदेव! आप मुझे हुक्म दें मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा, ''यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन मेरे लिए मालिक का भाणा मानना बहुत जरूरी है।'' आपने कहा:

तेरा भाणा मीठा लागे नाम पदार्थ नानक मांगे।

मंसूर के हाथ काट दिए, आँखें निकाल दी। मंसूर ने यही कहा, ''हे परमात्मा! इन पर मेहर कर, ये मुझे पहचान लें।''

मौहम्मद साहब के इतिहास में आता है कि जब आपको मक्का से निकाल दिया और आप मदीना जाने लगे तब वहाँ के लोग गंदगी की टोकरियां लेकर सड़क के दोनों तरफ खड़े हो गए और मौहम्मद साहब के सिर पर गंद फैंकने लगे। मौहम्मद साहब ने बुरा नहीं मनाया उन्होंने उस समय यही कहा, ''या अल्लाह ताला! इनके ऊपर रहम कर।''

मौहम्मद साहब वहाँ से कुछ आगे जाकर एक गुफा में बैठकर अपना भजन-अभ्यास करने लगे। जो लोग आपकी विरोधता करते थे उन्होंने आपको पकड़ लिया और अपनी तरफ से मारकर फैंक दिया। उन लोगों के दिल में रहम नहीं आया, उन्होंने सोचा कहीं इन्हें मूर्छा न आई हो! फिर उनके दाँत निकालकर देखे

कि कहीं यह जीवित न हो? जब मौहम्मद साहब के दाँत निकालने लगे तब भी आपने कहा, ''या अल्लाह ताला! इन पर रहम कर।''

वही गुरमुख है जिसे परमात्मा दया करके त्रिलोकी का राज्य दे दे, वह उसे पाकर खुश न हो, चाहे परमात्मा राज्य छीन ले तो वह नाराज न हो।

निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोई।

आप कहते हैं, ''गुरु निरवैर होता है दयालु होता है। गुरु दया करता है अगर कोई निरवैर के साथ वैर करता है तो वह सुख नहीं पा सकता, वह अंदर से थोथा होता है।''

सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ।
सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ।
नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होई।
जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी।
जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी।।

अब आप कहते हैं, ''सतगुरु सबका भला चाहता है। चाहे दुनिया उनका जितना भी बुरा सोचे लेकिन परमात्मा उनके पीछे होता है उनका कभी बुरा नहीं होने देता। परमात्मा गुरमुख और मनमुख दोनों को देखता है। परमात्मा से कुछ छिपा हुआ नहीं। जिसका जैसा कर्म है परमात्मा उसका वैसा भुगतान करवाता है।

कोई परमात्मा को बुद्धु नहीं बना सकता अगर हम किसी पर इल्जाम लगाते हैं या किसी का बुरा सोचते हैं कि हमारे कहने से शायद परमात्मा उसका रास्ता बंद कर देगा; ऐसा नहीं हो सकता। परमात्मा सबको देखता है। गुरु परमात्मा की किसी से दुश्मनी नहीं इसलिए जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा फल

जरूर मिलता है। जो जिस भावना से गुरु को देखता है, गुरु की सेवा करता है उसे वैसा फल जरूर मिलता है।'' महात्मा हमेशा हमें यही समझाते हैं:

दोख पराया देखके चलत हँसत हँसत।
आपदा कबहूँ न देखया जिसका आद न अंत।।

परमात्मा जिसे बड़ा करता है वही बड़ा होता है। परमात्मा जिसे बख्शे वही बख्शा जा सकता है, दुनिया में पूजा जा सकता है।

जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी।

आप कहते हैं, ''जिसने **प्रभु की भक्ति** की, प्रभु को अपने अंदर प्रकट कर लिया है अगर कोई उसकी बराबरी करे कि इसकी पूजा होती है लोग इसे मानते हैं मुझे क्यों नहीं मानते? वह भूला हुआ है, मूर्ख है अज्ञानी है।''

जिस नो सतिगुर मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी।
नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी।।

आप कहते हैं, ''जिसके ऊपर गुरु दया करता है वही परमात्मा से मिल सकता है। गुरु के ऊपर किसी का जोर नहीं कोई हुक्म नहीं कि हुक्म से हम यह चीज प्राप्त कर लेंगे।''

हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु।
जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''परमात्मा सत है, माया से रहित है। जिन्होंने प्रभु को जपा, **प्रभु की भक्ति** की वे प्रभु के घर पहुँच गए, उनके सिर से हौमें का भार उतर जाता है; उनके अंदर परमात्मा ही परमात्मा रह जाता है।'' सन्त-महात्मा परमात्मा के

शरीक नहीं होते, परमात्मा के प्यारे बच्चे होते हैं। प्यारा बच्चा अपने पिता से जो चाहे सो करवा सकता है।

जिन गुरमखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु।
कोई निंदा करे पूरे सतिगुरु की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु।।

गुरु साहब कहते हैं, ''जिन्होंने सतगुरु के कहने के मुताबिक अपना जीवन ढ़ाला, कमाई की अपने गुरु के हुक्म का पालन किया हम उन्हें नमस्कार करते हैं। जो उस महात्मा की निन्दा करता है सुनने वाला उसे फिटे मुँह फिटे मुँह कहता है।''

सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु।

आप कहते हैं, ''सतगुरु में परमात्मा काम करता है, परमात्मा उसमें प्रकट है, परमात्मा खुद उसकी रक्षा करता है। वह परमात्मा से यही कहता है कि रहती है तो तेरी, जाती है तो तेरी।''

धनु धनु गुरु गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु।
जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु।।

आप कहते हैं, ''मेरे सतगुरु अमरदेव धन्य हैं। उन्होंने शब्द-नाम की कमाई की हम उन्हें नमस्कार करते हैं।''

आपे धरती साजीअनु आपे आकासु।
विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''उस परमात्मा ने आप ही धरती बनाई आप ही आकाश बनाया और आप ही संसार की रचना रची। वह खुद ही हमारे मुँह में निवाला डालता है।''

मैं कहा करता हूँ कि जब परमात्मा हमारे शरीर में से निकल जाता है उस समय न हमारे हाथ काम करते हैं न मुँह

काम करता है और न आँख ही काम करती है, ये हरकत करना बंद कर देते हैं। महात्मा परमात्मा की दया और शक्ति को हर जगह देखते हैं अगर परमात्मा हमारे शरीर में अपनी शक्ति रखेगा तभी हम हाथ से निवाला अपने मुँह में डाल सकते हैं।''

सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु।
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु।।

आप कहते हैं, ''परमात्मा सबके अंदर बैठा है। परमात्मा आप ही गुरु बनकर हमें बताता है कि शब्द-नाम की कमाई करने से ही आपके पाप खत्म हो सकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

जब ही नाम हृदय धरयो भयो पाप का नाश।
मानो चिंगी आग की पड़ी पुरानी घास।।

सहजो बाई कहती हैं:

पहले बुरा कमाएके बांधी बिख की पोट।
कोट कर्म छिन में कटे जब आए गुरु की ओट।।

तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै।
जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै।।
तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै।
कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूडु हिरदै कपटु महा दुखु पावै।
मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै।।

आप कहते हैं, ''हे परमात्मा! तू सच्चा है तेरा कभी नाश नहीं होता तू फनाह नहीं होता। जो तेरी भक्ति करते हैं, तेरी उपमा करते हैं सदा तेरे साथ जुड़े रहते हैं यम कभी उनके पास नहीं आता। जिन्होंने कभी भक्ति नहीं की अभ्यास नहीं किया जो लोगों में बैठकर झूठ बोलते हैं कि हम भक्त हैं, आओ! हम तुम्हें

पार कर सकते हैं। परमात्मा धोखे में नहीं आता वह ऐसे लोगों को कूड़ा करके रद्द कर देगा।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

चूहा खड्ड न मावी तिक्कल बद्दा छज।

ऐसी हालत उन लोगों की है जिनसे अपना बोझ उठाया नहीं जाता, वे दुनिया से कहते हैं कि आप भी हमारे पीछे आ जाएं। आज तक परमात्मा को कोई धोखा नहीं दे सका, न दे ही सकता है। गुरु साहब कहते हैं:

हंसा देख तरंदया बग्गा आया चाव।
डुब मुए बग बपड़े सिर तल उपर पाँव।।

हंस सन्त को कहा गया है। हंस की उड़ान बहुत लंबी होती है बगुला ज्यादा दूर तक नहीं उड़ सकता। हंस को देखकर बगुले के दिल में भी ख्याल आया कि मैं भी ऊँची उड़ान भरूं। जब बगुला उड़ने लगा तो जल्दी से नीचे गिर गया, उसका सिर नीचे हो गया टांगे ऊपर हो गई।

रीसां करे तनाड़ियां जो साहिब दर खड़ियां।

जिन्होंने बैठकर कभी शब्द-नाम की कमाई नहीं की, अभ्यास नहीं किया, हम उन कमाई वाले महात्माओं की नकल करते हैं तो हमारी बगुले वाली हालत होती है।

आप किसी भी महात्मा का इतिहास पढ़कर देखें। गुरु नानक साहब परम सन्त थे। आपने ग्यारह साल कंकड़-पत्थरों का बिछौना किया बहुत सख्त मेहनत की। गुरु अमरदेव जी महाराज ने अपने सतगुरुओं की बहुत सेवा की। आप रात को जाग-जागकर अभ्यास करते थे। जब कभी नींद आती तो आप अपने केश कील से बाँध लेते थे। वह कील अभी भी वहाँ मौजूद है।

हुजूर स्वामी जी महाराज ने 17 साल एक अंधेरी कोठरी में बैठकर अभ्यास किया। बाबा जयमल सिंह जी ने बहुत अभ्यास किया, सख्त मेहनत की। जब आपको भूख लगती तो आप कई दिन पहले की रखी हुई रोटियां पानी में भिगोकर खा लिया करते थे। बाबा जयमल सिंह जी का एक नामलेवा कई बार मेरे पास आता था उसका नाम भी जयमल सिंह था। उसकी उम्र तकरीबन सौ साल से भी ऊपर थी। वह बताया करता था कि बाबा जयमल सिंह जी ने अपने पास एक छांटा रखा हुआ था जब नींद ज्यादा तंग करती तो आप अपने शरीर पर छांटा मार लिया करते थे।

महाराज सावन सिंह जी ने बहुत तपस्या की, नाम की कमाई की। आपने एक बैरागन बनाई हुई थी जब बैठे हुए नींद आने लगती तो आप खड़े होकर अभ्यास करते। आप दो-दो, तीन-तीन दिन अंदर से बाहर नहीं निकलते थे। बहुत से ऐसे प्रेमी अभी भी जीवित हैं जो महाराज कृपाल सिंह जी के साथ रहे हैं जिन्हें पता है कि महाराज जी ने किस तरह कमाई की, अपने गुरु के हुक्मों की पालना की। मुझे कई आदमी मिले हैं जो कहते हैं कि जिन्होंने कमाई देखनी है वे दिल्ली जाएं। महाराज कृपाल सिंह जी बहुत कमाई वाले हैं।

इसी तरह बाबा बिशनदास जी के पास 'दो-शब्द' का भेद था। दो मंजिल तक जाना भी अपने आपको न्यौछावर करने के तुल्य है। आपने एक पलड़ा बनाया हुआ था जिसमें कील लगे हुए थे अगर नींद तंग करती तो आप उस पलड़े के ऊपर बैठ जाते।

मैंने अपनी जिंदगी का काफी हिस्सा दुनिया से अलग जमीन के अंदर बैठकर बिताया है। मुझे मालूम है कि अभ्यास किस

तरह किया जाता है। मैं कई बार आर्मी की मिसाल देकर समझाया करता हूँ कि जब दूसरी वर्ल्ड वार लगी थी, हिटलर आगे बढ़ रहा था उस समय हमारे मुल्क के लोग बीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन फौज में जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता था।

उस समय मैंने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दिया। मेरी उम्र बहुत छोटी थी लेकिन दिल में बहुत दिलेरी थी। सब मुझे देखते कि यह छोटा सा बच्चा कितना दिलेर है। हमने कुछ दिन बाद लड़ाई में जाना था इसलिए डॉक्टर ने हमारा चेकअप किया। डॉक्टर ने हमारे कमांडर से पूछा, ''मैं किसका दूध लगाऊं?'' कमांडर ने आँखें भरकर कहा, ''सब बलि के बकरे हैं, तू सबका दूध लगा दे।'' उस समय दिल में बहुत मान था कि मैं लड़ाई में जा रहा हूँ। तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

कबीर साहब कहते हैं:

हँस हँस पिया न पाया जिन पाया तिन रोए।
हाँसे खेड़े पिया मिले ते कौन दुहागन होए।।

हमें हिम्मत करनी चाहिए, मेहनत करनी चाहिए। मेहनत की तरफ से कभी भी आलसी नहीं होना चाहिए।

*** *5 जुलाई 1980*

नाम जपने वाले का हृदय फौलाद जैसा होना चाहिए। सबसे पहले विश्वास की जरूरत है जो इन्सान विश्वास करता है कि परमात्मा है, गुरु उसको परमात्मा दिखा सकता है। जो परमात्मा और गुरु पर भरोसा करता है उसके अंदर परमात्मा प्रकट हो जाता है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमीः- *जो माता-पिता शाकाहारी जीवन का पालन करते हैं? उन्हें अपने बच्चों को शाकाहारी रखने में कितनी सख्ती बरतनी चाहिए? अगर बच्चे मीट वगैरहा खाना चाहते हैं तो माता-पिता उनके साथ कैसे पेश आएं? अगर बच्चा नामलेवा नहीं है और वह बीमार हो जाए तब बीमारी में डॉक्टर बच्चे को मीट वगैरहा खाने के लिए प्रेरित करते हैं तो उस हालत में क्या करना चाहिए?*

बाबा जीः- बच्चे भोली-भाली आत्माएं होते हैं, इनके साथ सख्ती करने की जरूरत नहीं पड़ती सिर्फ समझाने की जरूरत पड़ती है। शरीर के लिए जो प्रोटीन, विटामिन शाकाहारी भोजन से मिलते हैं वे मीट से नहीं मिलते। आजकल तो डॉक्टर लोगों ने भी शाकाहारी भोजन के बारे में बहुत कुछ बोल रखा है। माता-पिता बच्चों को समझाना नहीं चाहते थोड़ा बहुत दिमाग खर्च नहीं करना चाहते। बच्चे भोली आत्माएं इस मंडल में आई हुई है इन बेचारो को कुछ पता नहीं। माता-पिता थोड़ी सी मेहनत करें बच्चे को जानकारी दें क्योंकि बच्चे की जिंदगी माता-पिता ने ही बनानी है।

माता-पिता का फर्ज बनता है कि बच्चे को हर पहलु से समझाएं कि बेटा! शाकाहारी भोजन बहुत उत्तम है अगर सतसंगी माता-पिता मजबूत हैं तो मैं वायदे से कहता हूँ कि

सतगुरु पावर बहुत मदद करती है। गुरु की हमदर्दी हमारी समझ में नहीं आती, सतगुरु बड़ी ताकत है सतगुरु बच्चों को सपने में और प्रत्यक्ष होकर भी बता देता है कि खबरदार! अगर माँस खाया; यह तुम्हारे खाने वाली वस्तु नहीं।

हमारे इलाके में महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा था। उसके लड़के को किसी ने मीट खिला दिया। रात को महाराज सावन सिंह जी ने मीट खिलाने वाले का गला घोट दिया। बच्चे के मुँह पर माँस का लोथड़ा रखकर चिमटी से दबाया बच्चा जोर से चिल्लाने लगा कि मैं फिर माँस नहीं खाऊंगा। जिसने बच्चे को मीट खिलाया था उसने सतसंगियों के आगे विनती की कि मैं दोबारा कभी ऐसा काम नहीं करूंगा। पता नहीं! आज रात मेरे साथ क्या होगा?

सतगुरु को सतसंगियों का और उनके बच्चों का भी फिक्र है। सतसंगी को मजबूत होना चाहिए। अगर सतसंगी गुरु में भरोसा रखता है भजन-सिमरन करता है तो गुरु बेफिक्र नहीं; गुरु तो चौबिस घंटे मदद के लिए तैयार है।

एक प्रेमीः– *जब भी कोई काम होता है तो गुरु ऐसा क्यों कहते हैं कि यह काम मेरे गुरु ने किया है बेशक वह काम उसके शारीरिक गुरु ने किया होता है लेकिन उसका क्रेडिट वह अपने आंतरिक गुरु को देता है। जब वह अपने सेवकों द्वारा सेवा करवाता है और अपने सेवकों में बैठकर खुद सेवा करता है फिर भी अपने सेवकों को मान क्यों देता है कि यह सेवा तुमने की है।*

बाबा जीः - डाक्टर मोलिनो ने कल भी अच्छा सवाल पूछा था आज भी बहुत गहरा सवाल किया है। मैं परमपिता कृपाल की दया से ही इसका उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

किसी जमाने में मुस्लमानों के समाज ने मिजाजी इश्क को रूहानियत के साथ मिलाने की कोशिश की, वे मिजाजी इश्क को एक पुल की तरह समझते थे कि जिन्होंने रूहानी इश्क पैदा करना है उनके लिए मिजाजी इश्क पैदा करना जरूरी है। सच्चा इश्क विषय-विकारों से रहित पवित्र इश्क है।

हिन्दु पुराणों में कृष्ण और राधिका के प्यार की कहानियां मिलती हैं। वैसे तो कृष्ण की बहुत सी रानियां थी लेकिन कृष्ण का राधिका के साथ ज्यादा प्यार था। एक दिन प्यार में मस्त राधिका अपने आपको भूल गई और दूसरी सहेलियों से पूछने लगी, ''कहीं राधिका देखी है?'' सहेलियों ने पूछा, ''तू कौन है?'' राधिका ने कहा, ''मैं कृष्ण हूँ।'' प्रेमी चाहे हकीकी प्यार करता है चाहे मिजाजी प्यार करता है वह अपने आपको भूल जाता है; अपने आपको खत्म करके ही दूसरे में समा जाता है। मैं-मैं छोड़ देता है तब तू तू ही रह जाती है।

इसी तरह हीर-रांझा का इश्क मशहूर था लेकिन मैं जिस इश्क की बात करता हूँ उनका इश्क सच्चा और पवित्र था। वे लोग दुनिया की मैल और भोग-वासना से ऊपर उठे हुए थे। सूफी सन्त बुल्लेशाह ने अपनी काफियों में हीर-रांझा के प्यार का जिक्र इस तरह किया है कि जब हीर, रांझा के इश्क में मस्त हुई तो वह अपने आपको भूल गई।

हीर ने अपनी सखियों से पूछा, ''कहीं हीर देखी है?'' सखियों ने कहा, ''तू कौन है?'' हीर ने कहा, ''मैं रांझा हूँ।'' सखियों ने कहा, ''तू हीर है।'' हीर ने कहा, ''नहीं मैं रांझा हूँ।'' आखिर में बुल्लेशाह कहते हैं:

रांझा-रांझा करदी नी मैं, आपे रांझा होई।
सद्दो नी मैनूँ धीदो रांझा, हीर ना आखो कोई।।

दुनिया विषय-विकारों में लिपटी हुई है। हीर रांझा के इश्क की बातें तो करते हैं लेकिन उनकी तरह बनना बहुत मुश्किल है। मैं झंग की औरतों से मिला हूँ, उन्होंने चादर बांधी होती है। आमतौर पर हिन्दुस्तान की औरतें सलवार पहनती हैं। मैंने उन औरतों से पूछा कि तुमने चादर क्यों बाँधी हुई है? उन औरतों ने कहा कि सलवार का नाला जति का है लेकिन हमारे में हीर ही जति हुई है। कोई हीर जैसी हो तो सलवार में नाला बाँधे।

यह तो मैंने आपको मुसलमान जाति का इश्क बताया है कि किस तरह उस औरत-मर्द ने जंगल में रहते हुए भी अपनी जिंदगी को पवित्र रखा। वे शादी-शुदा जीवन व्यतीत किए बिना भोग-वासना से ऊपर उठे। वे अपने आपको भूलकर एक-दूसरे का रूप हुए लेकिन इसमें कोई रूहानी तरक्की नहीं होती। जब एक दूसरा दूसरे का साथ छोड़ गया फिर ही उनकी आँखें खुली कि ओह! यह तो एक धोखा ही था। इसलिए सन्त-महात्माओं ने अपनी बानियों में औरत-मर्द के प्यार को लिया है। आप परमात्मा गुरु की औरतें बनीं और परमात्मा को अपना सच्चा पति कहकर बयान किया।

गुरु और शिष्य का प्यार सच्चा और पवित्र होता है। गुरु पवित्र बर्तन है जो पवित्र के साथ प्यार करता है वह भी पवित्र हो जाता है। गुरु अंगददेव का गुरु नानक जी के साथ सच्चा प्यार हुआ। वह परमात्मा जिस देह में काम करता है फिर उस देह से अपने आप ही लगाव हो जाता है। आप कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जा गुरु सतगुरु देहा।

कबीर साहब कहते हैं:

झाती दिलबर वाली बाजो तन नू जाणें मुर्दा।

सच्चे आशिकों के दिल में सच्ची विरह होती है वे गुरु से कुछ नहीं कहते, वे तो चुपचाप एक मूरत की तरह खड़े होकर नजारे देखते हैं। उन्हें हर घड़ी अलग–अलग नजारे ही नजर आते हैं। जब महाराज कृपाल यहाँ आते उस समय यह खुला मैदान था। इस समय जहाँ हम बैठे हैं यहाँ मौसमियों का बाग होता था। जब आप गुफा देखेंगे अब वहाँ लकड़ी का तख्ता लगा हुआ है पहले वहाँ चिक लगी होती थी। जब हुजूर वापिस जाते तो मैं कहता:

चिक झरोके पास खड़ोके दूरों यार तकेंदा।
ये भी जाण गनीमत दिल नू लख लख शुक्र करेंदा।।

मैं अपने दिल के अंदर यह तुक हमेशा याद रखता हूँ कि मैं चिक के नजदीक खड़ा होकर अपने यार कृपाल को देखा करता था। मैं अपने दिल के अंदर शुक्र करता था कि शुक्र है मुझे दूर तक उनकी कार जाती हुई दिख रही है। मेरे परिवार के लोग मेरे और मेरे गुरुदेव के बीच दीवार

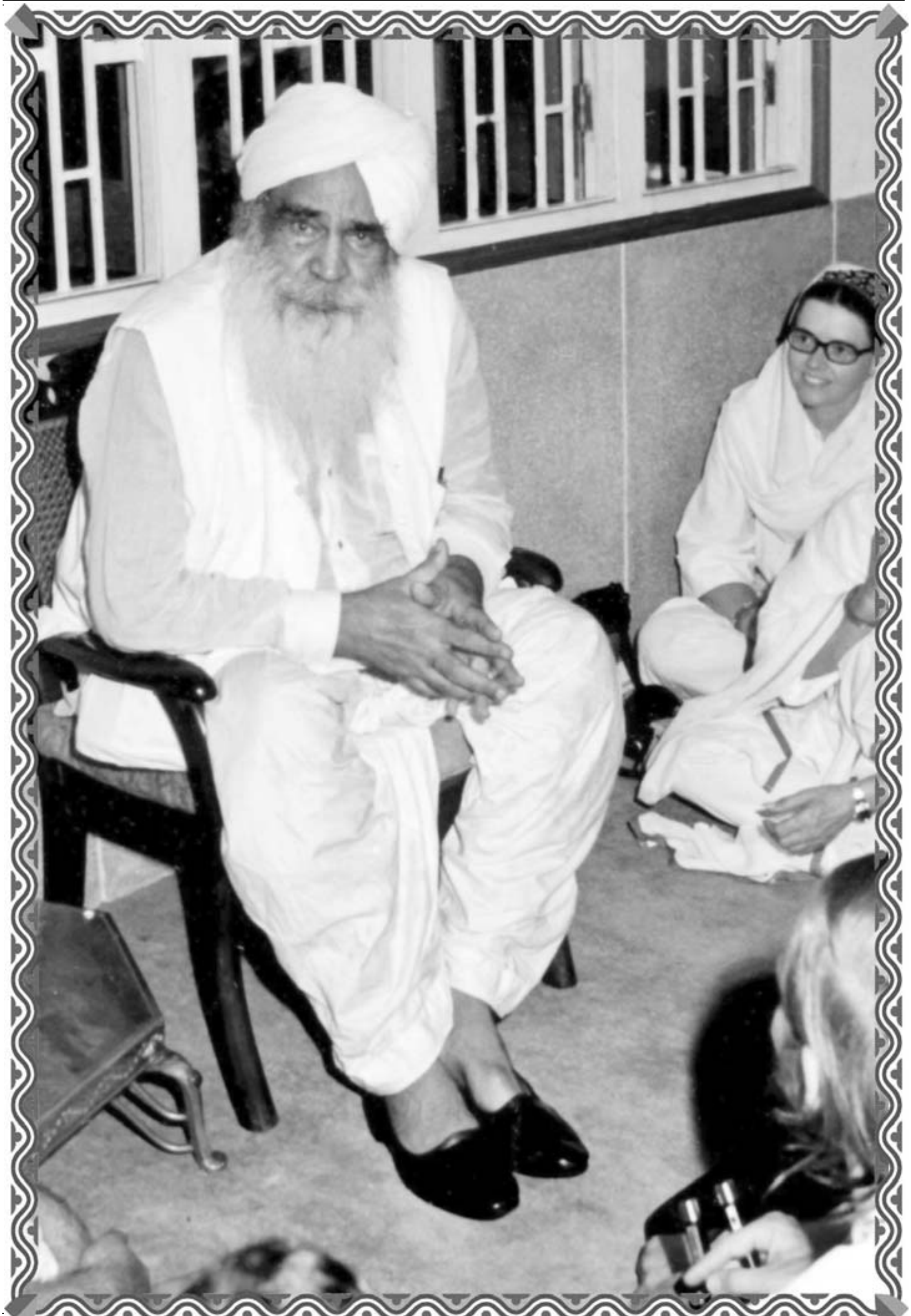

बनने की कोशिश करते थे लेकिन मैं आँखों से पानी निकालकर यही कहा करता कि मेरा दिल, दिलबर ने काबू कर लिया है। अब मेरा छूटना मुहाल हो चुका है, मुझे यह भी पता है जैसे उसने मुझे काबू किया है वैसे ही मैंने उसे काबू कर लिया है। अब वह मुझसे छूट नहीं सकेगा, आपने हमारे बीच में क्या लेना है?

जब कबीर साहब का अपने गुरु के साथ प्यार लगा तो उन्हें और कुछ दिखाई नहीं दिया। आपने अपने जिस्म के अंदर झाँककर देखा तो आपको गुरु ही गुरु नजर आया। तब आपने कहा, ''अगर तू मेरी आँख में आ जाए तो मैं आँख बंद कर लूं। न मैं किसी को देखूं और न तुझे ही किसी को देखने दूं। तू मेरा हो जाए मैं तेरा हो जाऊं। हम ऐसी जगह जाकर बस जाएं जहाँ कोई हमें देखने वाला न हो, कोई हमारे प्यार में बाधा न डाल सके।''

महाराज सावन सिंह जी इसके मुत्तलिक एक कहानी सुनाया करते थे। एक मुसलमान फकीर जब अंदर गया तो कह उठा, ''*मन खुदायम, मन खुदायम,* मैं ही खुदा हूँ।'' उस फकीर के सेवकों ने कहा कि आप कहा करते थे, ''बंदा खुदा नहीं, खुदा वजूद में नहीं आता।'' लेकिन आज आपने कहा है कि मैं खुदा हूँ। फकीर ने कहा, ''मैंने ऐसा नहीं कहा किसी और ने कहा होगा।'' एक दिन जब फिर उस फकीर का ख्याल अंदर जुड़ा तो उसने फिर वही कहा। जब अंदर खुदा का राज्य हो जाता है तो बंदा अपने आपको भूल

जाता है। देह से अपना कब्जा खत्म हो जाता है और इस देह पर गुरु का कब्जा हो जाता है।

सारे सन्त अपने आपको छोड़कर गुरु में समा गए, अपने आपको भूल गए उन्हें गुरु ही गुरु नजर आया। उनके लिए गुरु ही सब कुछ करता है। वे अपने आपको गुरु के हाथों में एक कठपुतली की तरह समझते हैं। गुरु जिस देश का वासी होता है उस मुल्क की भाषा मैं और तू की नहीं होती, वहाँ की भाषा तू तू ही है। कबीर साहब कहते हैं:

तू तू करता तू हुआ मुझमें रही न हूं।
जब आपा परका मिट गया जित देखां तित तूं।।

जब हम अपना आप ही भूल गए तो जहाँ देखते हैं वहाँ गुरु ही गुरु है। वह मनमोहनी मूरत आँखों में समा जाती है फिर यह किस तरह कह सकता है कि गुरु नहीं करता मैं करता हूँ। उसका अपना आप खत्म हो जाता है वहाँ गुरु का ही राज्य हो जाता है।

सतगुरु सेवक के लिए सोने की मुर्गी होता है, जो सोने के अंडे देता है। आप सोचकर देखें! अगर कोई किसी को दो पैसे भी दे दे तो वह कितना खुश होता है। जिन्हें वह सोने के अंडे देकर मालो-माल कर दे तो वह किस तरह अपने गुरु के गुण नहीं गाएगा, कैसे कहेगा कि मैं हूँ कुछ? गुरु ही साहूकार है सब कुछ गुरु ही गुरु है।

जब गुरु अर्जुनदेव जी अपने गुरु के प्यार में मतवाले हो गए अपने आपको भूल गए तब उन्होंने कहा कि मैंने आँखों

से अपने गुरु को देख लिया है अपना जन्म सँवार लिया है। गुरु और शिष्य का ऐसा प्यार बहुत थोड़े लोगों के भाग्य में होता है। बहुत थोड़े शिष्य ही अपनी जिंदगी में कामयाब होते हैं नहीं तो सब शिष्य, गुरु के सिर पर बोझ बनकर रह जाते हैं। गुरु सबका बोझ उठाकर अपने घर ले जाता है अगर दिल में सच्चा इश्क सच्चा प्यार आ जाए तो उसमें ही सारा भजन सिमरन आ जाता है।

हम कह तो देते हैं कि इश्क करना क्या मुश्किल है? जिन्होंने इश्क किया उनसे पूछें उन्हें अपने पराए में एक ही दिखाई देता है। दिल से नुक्ताचीनी खत्म हो जाती है, सबके अंदर गुरु ही बैठा नजर आता है। महात्मा कहते हैं:

जैसा कम इश्क है करदा ऐसा नहीं कटार सखे।
जख्म इश्क दे रोज लगदे ईक वार तलवार करे।
नन्हीं जान आशिकां वाली इश्क तां मारो मार करे।
खाना रज न खांदे आशिक निन्द्र नाल न प्यार करे।
दिल अंदर तस्वीर यार दी मुँह थी नाम पुकार करे।
मंत्र जंत्र चलदा नाहीं कोई दवा न कार करे।
ऐही दवा समझो ओहदी नजर मेहर दी यार करे।
चतुरदास ओह पूरा आशिक जो अंदरों दीदार करे।।

यह तो सच्चे आशिकों की बात हो गई जो अपने आपको छोड़कर अपनी हस्ती को खत्म करके गुरु के बन जाते हैं। गुरु उनके तन, मन और धन पर कब्जा कर लेता है।

सवाल का दूसरा हिस्सा यह है कि गुरु सेवक को मान क्यों देता है? प्यारेयो! सेवक मन इन्द्रियों का गुलाम है। मन का कहेकार है। यह मन के आगे मुर्दा हुआ बैठा है।

जैसे नहलाने वाला मुर्दे को सीधा करे उल्टा करे उसके ऊपर राख लगाए या साबुन लगाए उसे कोई शिकायत नहीं होती। यही हालत हमारे संसारी प्रेमियों की है हम मन के आगे मुर्दे होकर रह जाते हैं। मन की मर्जी है कि यह हमें विषय-विकारों में लगाए। मन की मर्जी है गुरु प्यार में लगाए। मन की मर्जी है सतसंग में ले जाए। मन की मर्जी है यह हमें जिस भी तरफ लेकर जाए।

मुझे महाराज सावन और कृपाल दो हस्तियों के चरणों में बैठने का मौका मिला है। कुछ लोगों ने महाराज कृपाल के खिलाफ बहुत सी चिट्ठियां पोस्ट की लेकिन महाराज कृपाल ने सावन के आगे यह भी नहीं कहा था कि लोग मेरी शिकायतें करते हैं बल्कि आप खामोश रहे। एक दिन बात हुई तो महाराज सावन ने कहा कि जो लोग चिट्ठियां पोस्ट करते हैं ये ऐब खुद उनके अंदर हैं। जो लोग किसी की नुक्ताचीनी करते हैं वे ऐब खुद उनके अंदर आ जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम किसी को नंगा करने की कोशिश करते हैं तो कुदरत का असूल है कि कुदरत हमें नंगा कर देती है। प्रेमी वही है जो किसी का ऐब देखकर उसके ऊपर पर्दा डाल दे। यह ताकत सतगुरु के अंदर है इसलिए सतगुरु सेवक को मान देता है ताकि सेवक दिल में शर्म महसूस करे कि मुझमें इतने ऐब हैं फिर भी सतगुरु मुझे अच्छा कहते हैं। कई बार सेवक अपनी शाबाश सुनकर अपने ऐब छोड़कर पवित्र जिंदगी जीने लग जाता है।

मेरा एक दोस्त अपनी माँ के साथ लड़कर शराब पीने लगा। उसने एक दिन शराब पीकर अपने नौकर से माँ को संदेश भिजवाया कि वह शराब पी रहा है, वह जो कर सकती है करके देख ले। उसकी माता ने तो क्या करना था? कुदरती उसका पिता किसी और जगह गया हुआ था वह आ गया। पिता उसे शराब पीते हुए देखकर दूसरी तरफ मुँह करके निकल गया जैसे बेटे को पता न लग जाए कि मैंने उसे शराब पीते हुए देखा है। बेटे के दिल में शर्म महसूस हुई फिर उसने शराब नहीं पी कि मेरा पिता कितना शरीफ आदमी है उसने मुझे शराब पीते हुए देखा और पूछा भी नहीं।

कई बार सन्त हमें मान देते हैं क्योंकि हम मन-इन्द्रियों के गुलाम हैं। सन्तों को पता है अगर मैंने इन गिरे हुओं को नहीं उठाया तो ये कैसे उठ सकते हैं? हम सोचते हैं! गुरु को पत्र लिखेंगे तो गुरु को पता लगेगा अगर हमने नहीं बताया तो शायद! पता न लगे। ऐसे लोगों ने सन्तमत से क्या कमा लेना है।

हमारा गुरु अंर्तयामी है। हम सोचते बाद में हैं वह सुन पहले लेता है। वह शाबाशी इसलिए देता है कि ये कमले, ओछे जीव किसी न किसी तरह समझ जाएं, इन्हें किसी न किसी तरह प्यार मिल जाए; मेरे प्यार को पाकर ही ये ऐबों को भूल जाएं। आपका गुरु सब कुछ जानता है फिर भी वह सेवक के मुँह से सुनकर उसे प्यार से समझाता है कि तू इस तरह नहीं, इस तरह कर।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

निन्दा

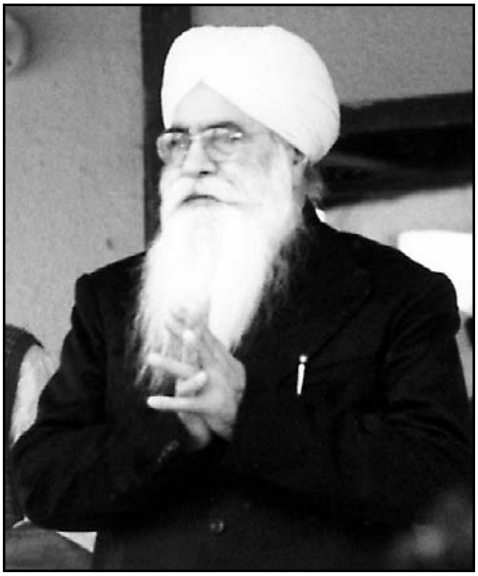

एक महात्मा, राजा अजासुर के पास लंगर के लिए कुछ दान मांगने गया। राजा ने उसे घोड़े की लीद उठाकर दे दी। परम्परा यह है कि हम जो दान देते हैं वह दस गुना बढ़ जाता है। महात्मा ने उस दान को अपनी कुटिया के पास रख दिया तो वह बढ़कर लीद का बहुत बड़ा ढ़ेर बन गया।

एक बार राजा अजासुर वहाँ से निकला। उसने कुटिया की तरफ देखा कि महात्मा के पास कोई घोड़े-घोड़ी तो नहीं है फिर यह लीद कहाँ से आई? महात्मा ने बताया, ''यह हमारे एक प्रेमी का दिया हुआ दान है जो बढ़ रहा है।'' राजा को याद आया कि यह कर्म तो मैंने ही किया था। राजा ने महात्मा से कहा, ''मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई, आप मुझे क्षमा करें।''

महात्मा ने कहा, ''राजा! यह तो खाकर ही खत्म होगी और तुझे ही खानी पड़ेगी।'' राजा बहुत दुखी हुआ और उसने महात्मा से प्रार्थना की, ''कोई युक्ति बताएं।'' महात्मा ने कहा, ''एक युक्ति है अगर लोग तेरी **निन्दा** करें तो वे लोग ये लीद खा लेंगे फिर तेरे हिस्से में नहीं आएगी।''

राजा के दिल में ख्याल आया कि कौन मेरी निन्दा करेगा? आखिर घर आकर राजा ने एक ऐसा कर्म किया कि एक कुवाँरी लड़की को जबरदस्ती महल में बुला लिया। लोग राजा की निन्दा करने लगे कि राजा पिता समान होता है। अफसोस की बात है कि राजा ने लड़की के साथ मुँह काला करने के लिए उसे महलो में बुला लिया है लेकिन राजा अंदर से सच्चा और पवित्र था। राजा लड़की की पूजा करता था, उसकी बहुत इज्जत करता था। लोग राजा की **निन्दा** करते रहे; अब जो लीद थी वह निन्दा करने वालों को मिल रही थी।

वहाँ एक बढ़ई ने राजा की निन्दा नहीं की। राजा ने जितनी लीद दान की थी वहाँ उतनी लीद बच गई। राजा फिर महात्मा के पास गया और पूछा, ''कुछ लीद बच गई है?'' महात्मा ने कहा, ''राजा! तेरे राज्य में एक बढ़ई है जिसने तेरी **निन्दा** नहीं की अगर वह भी तेरी निन्दा करे तो यह बची हुई लीद खत्म हो सकती है।''

अब तक राजा बहुत डर चुका था। वह रात को भेष बदलकर बढ़ई के घर गया और उससे कहने लगा, ''अपना राजा पहले बहुत अच्छा था लेकिन अब कितने बुरे कर्म कर रहा है?'' बढ़ई ने छड़ी उठाई और राजा से कहा, ''यह दिखाई देती है?''

राजा अजासुर वहाँ से चल पड़ा और महात्मा के पास आकर कहा कि वह बढ़ई तो **निन्दा** नहीं करता। महात्मा ने कहा, ''अब तू ही इसे खाकर खत्म कर।'' राजा ने वैसा ही किया। गुरु नानक साहब कहते हैं:

अजासुर रोवे भिखिया खाये, ऐसी दरगाह मिले सजाये।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

06 से 08 अक्टूबर 2017

03 से 05 नवम्बर 2017

01 से 03 दिसम्बर 2017

पत्रिका प्राप्त करने का स्थानः

अजायब बानी

आर.एस.जी – 01, वी.आई. पी. कालोनी,

रिद्धि सिद्धि इन्कलेव Ist

श्री गंगानगर – 335 001 (राजस्थान)

99 50 55 66 71 व 80 79 08 46 01

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम :

3 जनवरी से 7 जनवरी 2018,

भूरा भाई आरोग्य भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा),

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई – 400 067

98 33 00 40 00, व 022–24 96 50 00